परिशिष्ट 2

सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाने हेतु अध्ययन के लिए सहायता

''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)।

सत्य के वचन (पवित्र बाइबल) को ठीक रीति से काम में लाना बहुत आवश्यक है। अन्य बातों के साथ, इसका अर्थ है कि पुराने और नये नियम में अन्तर को समझना। पुराना नियम प्रतिबिम्ब है, जबकि नया नियम वास्तविकता है (इब्रानियों 10:1)। पुराने नियम को ''क्रूस पर कीलों से जड़'' दिया गया है; और आत्मिक तौर पर हम अब नये नियम के अधीन हैं (कुलुस्सियों 2:14)। पुराना नियम उदाहरणों के लिए और यह दिखाने के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर कैसे हमेशा अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी करता है (1 कुरिन्थियों 10:6)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं पुराने नियम में की गईं परन्तु नये नियम में पूरी हुईं। (पृष्ठ 248 पर दिए चार्ट का अध्ययन करें)।

सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना
2 तीमुथियुस 2:15

	पुराना नियम **प्रतिज्ञाएं की गईं** (उत्पत्ति 3:15; 12:3)	नया नियम **प्रतिज्ञाएं पूरी हुईं**
1.	राज्य स्थापित होना (दानिय्येल 2:44)	मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:8; 2:1-4; लूका 22:29, 30; 1 कुरिन्थियों 11:23
2.	यहोवा का भवन बनाया जाना (यशायाह 2:2, 3)	इब्रानियों 10:21; 1 तीमुथियुस 3:15
	''अन्त के दिनों में'' होगा *यरूशलेम से आर भ होगा* *सभी जातियां उसमें आईं*	प्रेरितों 2:16, 17; इब्रानियों 1:1, 2 लूका 24:46, 47; प्रेरितों 1:4-8 प्रेरितों 2:9; रोमियों 1:16
3.	मसीह राजा होगा (यिर्मयाह 23:5, 6)	मत्ती 28:18; प्रेरितों 2:29-33
4.	नई वाचा का बन्धना (यिर्मयाह 31:31)	मत्ती 16:18, 19; प्रेरितों 2:36-38; इब्रानियों 9:15-17
5.	पवित्र आत्मा का दिया जाना (योएल 2:28)	प्रेरितों 2:16-21

कलीसिया के स बन्ध में की गई सारी प्रतिज्ञाएं
प्रेरितों 2 अध्याय में पूरी होती हैं, जो कि एक ही दिन
अर्थात पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाओं का विवरण है।

प्रेरितों 2 अध्याय से **पहले** प्रत्येक आयत राज्य के **भविष्य** में होने की बात करती है (यशायाह 2:2-4; मीका 4:1, 2; दानिय्येल 2:44; मत्ती 3:1, 2; 6:9, 10; 16:18; मरकुस 9:1)।

प्रेरितों 2 अध्याय: पिन्तेकुस्त

प्रेरितों 2 के **बाद** हर एक आयत राज्य के **अस्तित्व** में होने की बात कहती है (प्रेरितों 2:47; कुलुस्सियों 1:13, 14)।

बाइबल के अनुसार नई मण्डली को कैसे संगठित करें?

एक स्वतन्त्र देह के रूप में: प्रभु की कलीसिया की प्रत्येक मण्डली अलग, स्वतन्त्र देह है। एक मण्डली दूसरी मण्डली के ऊपर कभी नहीं होती। कलीसिया का संगठन हो या कोई और संगठन, इनमें से कोई भी स्थानीय मण्डली से बड़ा नहीं है।

मसीह की देह के रूप में: बाइबल में कलीसिया को ''मसीह की देह'' कहा गया है। इस अलंकार में हम देखते हैं कि ''मसीह देह का सिर'' है (कुलुस्सियों 1:18; इफिसियों 1:22)। जैसे शारीरिक देह के हर एक अंग का अपना-अपना काम होता है, वैसे ही मसीह की देह में जी है। कलीसिया का कोई भी सदस्य दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। सज़ूर्ण देह अर्थात कलीसिया की बेहतरी के लिए हर एक का अपना-अपना स्थान और योगदान है।

यीशु, एकमात्र सिर के रूप में: मसीह ''कलीसिया का सिर'' है और इस प्रकार उसके पास सारा अधिकार है (मत्ती 28:18)। कलीसिया की बनावट में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने की आज्ञा किसी को भी नहीं है। क्योंकि ऐसा करने का किसी को अधिकार नहीं है।

प्राचीनों की अगुआई में: स्थानीय मण्डली जब गिनती और आध्यात्मिक परिपक्वता में बढ़ने लगे तब, मण्डली में से सेवा के लिए पुरुषों को प्राचीन (ऐल्डर्ज़) नियुक्त करना चाहिए। इन पुरुषों को मण्डली के द्वारा ही चुना जाना चाहिए; वे अपने आप नियुक्त नहीं होते। प्राचीनों को ''चरवाहे'' कहते हैं और वे झुण्ड की रखवाली व सेवा करते हैं (1 पतरस 5:1-5)। प्राचीनों की योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3:1-8 और तीतुस 1:5-8 में मिलती हैं। कलीसिया की स्थापना प्राचीनों (ऐल्डरों) और सेवकों (डीकनों) की नियुक्ति के बिना हो सकती है। पहले तो कलीसिया का इनके बिना ही अस्तित्व में आना आवश्यक है, क्योंकि इन पदों पर सेवा करने की योग्यता पाने के लिए वर्षों का अनुभव चाहिए।

सेवा के लिए सेवकों **(डीकनों) की नियुक्ति से:** पुरुषों को मण्डली की सेवा में डीकनों के पद पर नियुक्त किया जाता है। वे प्राचीनों के अधीन काम करते हैं (फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों 20:28)। उनकी योग्यताएं 1 तीमुथियुस 3:8-13 में दर्ज हैं।

मसीही पुरुष

कई तरह से, मसीही पुरुषों की ज़िम्मेदारियां भी वैसी ही हैं जैसी कि मसीही स्त्रियों की। दोनों के लिए ही कलीसिया की सभाओं में सच्चे मन से उपस्थित होना (इब्रानियों 10:25), उदारता से चन्दा देना (1 कुरिन्थियों 16:2), शुद्ध जीवन जीना (याकूब 1:27), सुसमाचार का प्रचार करना (मत्ती 28:19, 20), बाइबल अध्ययन करना (2 तीमुथियुस 2:15; देखें प्रेरितों 17:11), और आत्मिक विकास करना (1 परतस 2:2) आवश्यक है।

मसीही पुरुष क्या न करे:

1. वह अपनी पत्नी और बच्चों को गाली न दे (इफिसियों 5:25-31; 1 पतरस 3:7; 1 थिस्सलुनीकियों 2:11)।
2. वह हिंसक न हो (रोमियों 12:18)।
3. वह असंयमी न हो (1 कुरिन्थियों 6:18, 19)।
4. वह विलासी न हो (2 तीमुथियुस 3:4; तीतुस 3:3)।
5. वह निर्मोही अथवा मनोभावहीन न हो (लूका 22:62; यूहन्ना 11:35; प्रेरितों 20:37)।

मसीही पुरुष क्या करे:

1. उस पर प्रभु की कलीसिया में अगुआई करने की ज़िम्मेदारी है (1 तीमुथियस 2:8-15; 1 कुरिन्थियों 14:33, 36)।
2. वह प्रेम से अपने परिवार की अगुआई करे (इफिसियों 5:21-33; कुलुस्सियों 3:18-21; 1 पतरस 3:1-6; 1 कुरिन्थियों 11:2-5)।
3. उसे परिवार की आध्यात्मिक तथा भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना है (1 तीमुथियुस 5:8)।
4. उसे यह ध्यान रखना है कि उसके बच्चों का पालन पोषण सही ढंग से हो (इफिसियों 6:4)।

पुरुषों के लिए नये नियम के ''आदर्श''

1. सभी मसीहियों में कलीसिया के अगुओं की योग्यताएं पाने की आकांक्षा होनी चाहिए (देखिए पृष्ठ 252)।
2. उन्हें यीशु की तरह, सेवक बनकर अगुआई करनी चाहिए (लूका 22:27)।
3. पुरुष बरनबा(स) के जैसे, धन का दान देने और उत्साह भरने वाले हो सकते हैं (प्रेरितों 4:36, 37)।
4. फिलेमोन की तरह, लोग मसीही साथियों के लिए अपने घरों को खोल सकते हैं (फिलेमोन 2) और भाईचारे की भलाई के लिए व्यक्तिगत मनमुटाव को भुला सकते हैं (फिलेमोन 10-20)।

मसीही स्त्री

वचन के अनुसार मसीही स्त्री क्या नहीं कर सकती:

1. उसे कलीसिया की सभा में अगुआई करने की मनाही है (1 कुरिन्थियों 14:34, 35; देखें 14:19, 23, 26, 28)। सभा में प्रचारक बोलते हैं, इसलिए वहां मसीही स्त्रियां प्रचार का काम न करें ।
2. उसे पुरुष पर प्रभुत्व करने की मनाही है; इसलिए, वह प्राचीन अथवा सेवक के रूप में सेवा नहीं कर सकती (1 तीमुथियुस 2:12; 3:2)।
3. उसे अपने पति के अधिकार को चुनौती देने की मनाही है (1 कुरिन्थियों 11)।

वचन के अनुसार मसीही स्त्री क्या कर सकती है:

1. उसे ऐसे किसी काम में अगुआई करने की मनाही नहीं है जिसमें उसका पुरुषों पर प्रभुत्व न हो।
2. उसे अन्य स्त्रियों या बच्चों को शिक्षा देने की मनाही नहीं है। कुछ परिस्थितियों में वह पुरुषों को सिखा सकती है या सिखाने में सहायता कर सकती है (प्रेरितों 18:24-28; तीतुस 2:4)।
3. उसे किसी को मसीह में लाने, व्यक्तिगत काम करने की मनाही नहीं है।
4. उसे कलीसिया के लिए काम करने, यहां तक कि कोई ऐसा काम करके वेतन पाने की भी मनाही नहीं है, जो बाइबल के अनुसार उसके लिए करना सही हो।

महिलाओं के लिए नये नियम के ''आदर्श ''

1. यीशु के साथ महिलाएं रहती थीं और उसकी शिक्षा में धन से उसकी सहायता करती थीं (मत्ती 27:55; लूका 8:1-3)।
2. लाज़र की बहन, मरियम, प्रभु के वचन को, उसके कदमों में बैठकर सुनती थी (लूका 10:39,42)।
3. मरियम मगदलीनी यीशु की समर्पित शिष्या थी, जो जीवित प्रभु के बारे में औरों को बड़ी उत्सुकता से बताती है (यूहन्ना 20:1-18)।
4. दोरकास, अर्थात तबीता ''बहुतेरे भले-भले काम और दान किया करती थी'' (प्रेरितों 9:36)।
5. फीबे ''कलीसिया की सेविका,'' पौलुस की सहायक थी (रोमियों 16:1,2)।
6. प्रिस्किल्ला एक आज्ञाकार पत्नी, एक प्रेरित की सहकर्मी और मिशनरी थी। अपने पति के साथ उसने,अपने घर में कलीसिया को जगह दी (रोमियों 16:3-5; प्रेरितों 18:1-3; प्रेरितों 18:24-28 देखिए)।

जो प्राचीनों के लिए है,
वह सभी मसीहियों के लिए अनिवार्य है

प्राचीन	योग्यताएं	सभी मसीही
1 तीमुथियुस 3:2	*निर्दोष (निष्कलंक)*	1 तीमुथियुस 5:4; 6:14
1 तीमुथियुस 3:2	*संयमी (चौकस)*	1 पतरस 1:13; 4:7; 5:8
1 तीमुथियुस 3:2	*स य (समझदार; ग भीर)*	तीतुस 2:2, 5; रोमियों 12:3
1 तीमुथियुस 3:2	*पहुनाई करने वाला*	रोमियों 12:13; इब्रानियों 13:2
1 तीमुथियुस 3:2	*सिखाने में निपुण*	इब्रानियों 5:12
1 तीमुथियुस 3:3	*पियक्कड़ नहीं (शराबी नहीं)*	तीतुस 2:3; इफिसियों 5:18
1 तीमुथियुस 3:3	*कोमल (सहनशील)*	फिलिप्पियों 4:5; कुलुस्सियों 3:13; तीतुस 3:2
1 तीमुथियुस 3:3	*झगड़ालू नहीं (न झगड़ालू; न मारपीट करने वाला)*	याकूब 4:2; 2 तीमुथियुस 2:24
1 तीमुथियुस 3:3	*धन का लोभी न हो*	1 तीमुथियुस 6:10 2 तीमुथियुस 3:2
1 तीमुथियुस 3:4	*बच्चे आज्ञाकारी, आदर करने वाले हों*	इफिसियों 6:1-4
1 तीमुथियुस 3:4	*बाहर वालों में सुनाम हो*	1 पतरस 2:12-16
तीतुस 1:8	*न्यायी (न्यायप्रिय)*	कुलुस्सियों 4:1
तीतुस 1:8	*(समर्पित) पवित्र*	इफिसियों 4:24; 1 तीमुथियुस 2:8
तीतुस 1:8	*आत्मसंयमी (मिताचारी)*	गलतियों 5:23

प्राचीनों की तीन योग्यताएं हैं जो सभी मसीहियों में होनी अनिवार्य नहीं हैं! प्राचीन "एक ही पत्नी का पति" होना चाहिए, उसके "बच्चे विश्वासी" हों, और वह "नया चेला न हो" (1 तीमुथियुस 3:2, 6; तीतुस 1:6)। (यद्यपि विवाहित मसीही का एक ही जीवन साथी होना चाहिए, परन्तु अविवाहित पुरुष व स्त्री भी मसीही बन सकते हैं।)